



UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS  
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE  
NAME

CENTRE  
NUMBER

--	--	--	--	--

CANDIDATE  
NUMBER

--	--	--	--



**HINDI AS A SECOND LANGUAGE**

**0549/01**

Paper 1 Reading and Writing

**May/June 2008**

**2 hours**

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

**READ THESE INSTRUCTIONS FIRST**

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.  
Write in dark blue or black pen.  
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.  
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.  
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **12** printed pages.



## खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1-6.

लखनऊ के इक्के और ताँगे पर निम्नलिखित लेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अवध की संस्कृति में सुसज्जित घोड़ा परिवहन का साधन और शान का प्रतीक था। मुख्य रूप से तीन प्रकार के ताँगे और इक्के मिलते हैं – बग्गी, फिटन और टमटम। बग्गी बंद डिब्बे की तरह की होती है, तो फिटन और टमटम खुले वाहन हैं, जिन्हें नवाबों द्वारा यात्रा में वरीयता दी जाती थी। किन्तु, ताँगे और इक्के का शाब्दिक अर्थ अधिक अश्व शक्ति की ओर इंगित करता है। इक्के में एक घोड़ा होता है जबकि बग्गी या ताँगे में दो, चार या अधिक घोड़े होते हैं। यह वास्तव में इस्तेमाल करने वाले की सामाजिक प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 19वीं सदी के प्रारम्भ में अवध के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक माहौल में बदलाव आया। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हल्के वाहनों का निर्माण और इस्तेमाल होने लगा, जिसमें कम से कम अश्व शक्ति लगे। सामान्य बोलचाल में इक्के का अर्थ है इक या एक यानि एक व्यक्ति के इस्तेमाल के लिए। इसके विपरीत ताँगा एक परिवार वाहन था। किन्तु, किफायत की मजबूरी को देखते हुए इक्के में अधिक संख्या में यात्री बैठाने पड़े। ताँगा अपेक्षाकृत भारी और बड़ा वाहन है, जिसमें पैरों के लिए अधिक जगह होती है और चार से छह वयस्क आगे पीछे कमर लगाकर बैठ सकते हैं।

हर साल इन ताँगों और इक्कों की दौड़ लखनऊ में होती है। इस आकर्षक दौड़ की तैयारियाँ प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का निमंत्रण प्राप्त होने या मीडिया में इसकी घोषणा के साथ ही शुरू हो जाती हैं। जँगी घोड़े इस दौरान सबके लिए आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु होते हैं। उनके बनाव-श्रृंगार का काम शुरू होता है, जो उसी तरह किया जाता है जैसे सौंदर्य प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाली सुँदरियों का किया जाता है। प्रतियोगिता के दिन प्रतिभागी जँगी घोड़े को जो मुखौटा पहनाया जाता है, वह सोने चाँदी या रँगीन चमकदार चादर से बना होता है। एक विशेष साजसज्जा के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के अलँकरण शामिल होते हैं, जिनका इस्तेमाल घोड़े को सिर से खुर तक सजाने के लिए किया जाता है ताकि प्रत्येक इक्के या ताँगे को स्वयं की बेजोड़ पहचान दी जा सके। घोड़े के खुरों का भी श्रृंगार किया जाता है। पुरानी नाल के स्थान पर नई नाल लगाई जाती है। पैरों की सुँदरता बढ़ाने के लिए कशीदाकारी युक्त वस्त्र पैरों में डाले जाते हैं और पीतल या चाँदी के घुँघरू बाँधे जाते हैं। माइक पर घोषणाओं, सीटियाँ बजाने और झंडियाँ दिखाने के साथ ही ताँगे और इक्के वाले अपने-अपने घोड़ों के साथ मोर्चा संभालते हैं। मंच तैयार है, एक गोली हवा में छूटती है और दौड़ शुरू होती है।

1 बग्गी फिटन और टमटम में क्या अंतर है?

..... [1]

2 अधिक अश्व शक्ति का क्या अर्थ है?

..... [1]

3 सामाजिक आर्थिक बदलावों ने किस तरह वाहनों को प्रभावित किया?

..... [1]

4 ताँगा किस रूप में इक्के से अलग वाहन है?

..... [1]

5 प्रतियोगिता की तैयारी कब शुरू होती है?

..... [1]

6 घोड़ों के पैरों को किस रूप में सजाया जाता है?

..... [1]

[अंक: 6]

**अभ्यास 2 प्रश्न 7**

नरेश यादव की उम्र 16 वर्ष है। वह मकान न. 22, सिविल लाइंस, इलाहाबाद में रहता है। टेलि. न. 395759 है। उसे पाँचवीं कक्षा से ही चित्रकला के प्रति विशेष रुचि रही है। उसने दो वर्ष पहले इलाहाबाद में अपने चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई थी। प्रदर्शनी की सफलता से प्रोत्साहित होकर नरेश चित्रकला को ही अपने रोजगार स्वरूप अपनाना चाहता है। उसे प्राकृतिक सुंदरता आंकने में ज्यादा दिलचस्पी है। चटकीले रंगों से उसने कई भौगोलिक परिस्थितियों को अपने चित्रों में संजोया है।

नरेश यादव ने समाचार पत्र में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय की कार्यशाला का विज्ञापन देखा और इसके लिए अपना आवेदन भेजने का निर्णय किया।

**राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय**  
**जयपुर हाउस, नई दिल्ली-110003**  
**दूरभाष 23382835, 23384640(एक्स.नं.225)**

**चित्रकला कार्यशाला**

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय जयपुर हाउस, नई दिल्ली, विभिन्न तीन वर्ग समूहों, प्रत्येक वर्ग में 60 विद्यार्थियों की चित्रकला कार्यशाला का आयोजन कर रहा है।

**कनिष्ठ समूह 5-8 वर्ष**

**मध्यम समूह 9-12 वर्ष**

**वरिष्ठ समूह 15-17 वर्ष**

**(कुल 180 विद्यार्थी)**

इच्छुक विद्यार्थी राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय जयपुर हाउस, नई दिल्ली में काउन्टर पर अपने आवेदन पत्र समेत 400 रूपए का पंजीकरण शुल्क जमा करा कर अपने नाम का पंजीकरण करा सकते हैं। पंजीकरण दिनांक 12 जुलाई 2008, प्रातः 10.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक। प्रत्येक वर्ग में 60 विद्यार्थियों के पूरा होने तक प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर किया जाएगा। (सोमवार अवकाश)

10.30 बजे से मध्याह्न 1.00 बजे तक कार्यशाला होगी।

सभी विद्यार्थियों को ड्राइंग बोर्ड, कागज़, रंग, ब्रश व अन्य सामग्री स्वयं लानी होगी।

अभिभावक और इच्छुक विद्यार्थियों को कार्यशाला संबंधी राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय के नियमों का पालन करना होगा।

आप अपने को नरेश यादव मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

**आवेदन पत्र**  
**राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय**  
**जयपुर हाउस, नई दिल्ली-110003**  
**दूरभाष 23382835, 23384640(एक्स.नं.225)**

नाम.....

आयु .....

स्थायी पता .....

दूरभाष .....

पिछले कितने वर्षों से चित्रकला में रुचि है .....

चित्रकला के किसी खास रूप में रुचि है,  
बताइए .....

.....

.....

.....

[अंक: 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8-11

प्रसिद्ध सितार वादक अनुष्का शंकर से पत्रकार विभा की बातचीत के कुछ अंश

विभा – अपने बचपन के बारे में कुछ बताइए?

अनुष्का – मेरा जन्म लंदन में हुआ। अपने बचपन के पहले दस साल मैंने लंदन में बिताए। मुझे नौ साल की उम्र से सितार बजाने की शिक्षा मिली। आप जानती हैं कि यह शिक्षा मुझे अपने पिता और सितार के जाने माने कलाकार पंडित रवि शंकर से मिली। अपने बचपन के दस साल लंदन में बिताने के बाद मैं 11 साल की उम्र में केलिफोर्निया चली गई। और मैंने संगीत की पहली प्रस्तुति 13 साल की उम्र में की।

विभा – इतनी कम उम्र से सितार बजाना आपने शुरू किया तो क्या आप शुरू से ही पेशेवर सितार वादक बनना चाहती थीं?

अनुष्का - मेरे मन में पेशेवर सितार वादक बनने की इच्छा तेज़ तब हुई जब मैं लगातार सितार बजाती रही। शुरू में तो मैं सिर्फ जानने की कोशिश ही करती रही। सितार के प्रति लगाव पैदा करने में मुझे कुछ साल तो लगे। हालाँकि मैं हमेशा सितार सुनती रहती थी लेकिन मैं इसे अपने जीवन में अपनाऊँ या नहीं इसके बारे में मैं पूरी तरह से सोच नहीं पाई थी।

विभा – इस कला को सीखने में मेहनत और साधना के अलावा आपके परिवार की क्या भूमिका रही?

अनुष्का - जो मैंने सीखा उसमें परिवार की परंपरा, सम्मान इस कदर शामिल था कि मैंने बचपन से किसी बात के लिए पिता को न करना या मना करना नहीं सीखा। यद्यपि यह सही है कि मेरे माता पिता ने हमेशा वह सबकुछ करने दिया जो मैं करना चाहती थी। छुट्टियों में अपने दोस्तों के साथ मैं जहां भी जाना चाहती थीं, मेरे माता पिता जाने देते थे।

विभा – यह बताइए कि अब तक आपके कितने एलबम आ चुके हैं?

अनुष्का - अब तक मेरे तीन एलबम आ चुके हैं। पहला एलबम मेरे अपने नाम से ही आया था यानी 'अनुष्का'। उसके बाद सन 2000 में 'अनुराग' नामक एलबम आया। तीसरा एलबम 'लाईव करनेगी हॉल' नाम से जारी किया गया है।

विभा - क्या आपको अपनी बहन नोरा जोन्स की सफलता से किसी किस्म की जलन होती है? वह भी पूरी दुनिया में काफी मशहूर गायिका रहीं हैं।

अनुष्का – मुझे लगता है कि मेरा जलना कुछ ऐसा ही होगा जैसे कि मैं ब्रिटनी स्पियर्स से जलूँ। हम दोनों दो अलग किस्म का संगीत बजाते हैं और इसके बीच में किसी तरह की तुलना करना ठीक नहीं है। इसलिए अगर मैं अपनी बहन से जलूँ तो यह बिल्कुल ठीक नहीं लगता।

आप अनुष्का शंकर के बारे में एक लेख लिखना चाहते हैं। नीचे लिखे शीर्षक या पहलूओं से जुड़ी बातों को संक्षेप में लिखिए।

8 बचपन

.....  
.....  
.....[2]

9 परिवार की भूमिका

.....  
.....  
.....[2]

10 संगीत एल्बम

.....  
.....  
.....[2]

11 बहन से तुलना

.....  
.....[1]

[अंक: 7]

अभ्यास 4 प्रश्न 12

निम्नलिखित लेख जो दांतों की समस्या पर केन्द्रित है उसे पढ़ने के बाद संक्षेप में लेख के मुख्य पहलुओं को अपने शब्दों में लिखिए।

आपका लेख संक्षिप्त और 100 शब्दों से ज्यादा नहीं होना चाहिए। संगत बिन्दुओं के समावेश पर 6 अंक तथा इनकी भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

### दांतों के रोगों से बचाव

अमरीकी मेडिकल जर्नल में मशहूर दंत रोग विशेषज्ञ डा. जे. ए. सिंकलेयर ने एक लेख में बढ़ते दंत रोगों का मूल कारण हमारे भोजन में विटामिन ए तथा सी की कमी का होना तथा अधिक गर्म और अधिक ठंडे पदार्थों का सेवन करना बताया है। भारत में दंत रोगों से पीड़ित लोगों का आंकड़ा 20 करोड़ से ज्यादा है।

दंत रोगों में सबसे ज्यादा पायरिया का प्रकोप है। पायरिया से बचाव के लिए मुँह और दांतों की समुचित सफाई बेहद जरूरी है। दांतों को साफ करने के लिए इस्तेमाल होनेवाले ब्रश की सफाई पर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है जबकि इसे भी गर्म पानी से नियमित रूप से साफ करना जरूरी है।

पान, तंबाकू, सिगरेट-जैसी निरर्थक वस्तुओं के सेवन से मुँह की ग्रंथियों में विकृति आ जाती है और दांत कमजोर पड़ जाते हैं तथा रोगग्रस्त हो जाते हैं। भोजन के बाद यदि ठीक से मुँह साफ न किया जाए तो खाद्य पदार्थों के छोटे कण दांतों की झिरी या जड़ों में अटक कर सड़न पैदा करते हैं और लैक्टिक एसिड बनाते हैं। इससे दांत गलने लगते हैं। ज्यादा गर्म या ज्यादा ठंडा भोजन भी दांतों के लिए हानिकारक है। अतः सामान्य तापक्रम के भोजन ही लेने चाहिए। दांतों की सुबह-शाम नियमित सफाई भी जरूरी है। बच्चों को चॉकलेट, फास्ट फूड, शीतल पेय आदि से बचाना चाहिए। दांतों की रक्षा के लिए व्यक्ति को नियमित रूप से नीबू, संतरा, मौसमी, आंवला, टमाटर-जैसे खट्टे फल तथा गाजर, मूली चुकंदर, पत्तेवाली सब्जियाँ, गन्ना, मक्का आदि फल-सब्जियों का सेवन करना चाहिए।





A series of horizontal dotted lines for writing, spanning the width of the page.

## अभ्यास 5 प्रश्न 13-20

चम्बा की घाटी पर आधारित निम्नलिखित लेख एक पत्रिका से लिया गया है। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### चम्बा की घाटी

कला पारखी डा. बोगल ने यूं ही चम्बा को अचंभा नहीं कह डाला था। और सैलानी भी इस नगरी में यूं ही नहीं खिंचे चले आते। चम्बा की वादियों में ऐसा कोई सम्मोहन जरूर है जो सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है और वे बार बार यहां दस्तक देने चले आते हैं। जहां मंदिर में उठती स्वर लहरियां परिवेश को आध्यत्मिक बनाती हैं वहीं रावी नदी की मस्त रवानगी और पहाड़ों से आते शीतल हवा के झोंके सैलानियों को ताजगी का एहसास कराते हैं। चम्बा का इतिहास, कला, धर्म और पर्यटन का मनोहरी मेल है और चम्बा के लोग अलमस्त, फक्कड़ तबीयत के। चम्बा की पहाड़ियों को ज्यों ज्यों हम पार करते हैं, आश्चर्यों के कई वर्क सामने खुलते चले जाते हैं। प्रकृति अपने दिव्य सौन्दर्य की झलक दिखलाती है। चम्बा के सौन्दर्य को आत्मसात करने के बाद ही डा. बोगल ने इसे अचंभा कहा होगा।

चम्बा का यह सौभाग्य रहा कि उसे एक से एक बड़ा कलाप्रिय, धार्मिक और जनसेवक राजा मिला। इन राजाओं के काल में न सिर्फ यहाँ कि लोककलाएँ फली फूलीं अपितु इनकी ख्याति चम्बा की सीमाओं को पार करके पूरे भारत में फैली। इन कलाप्रिय नरेशों में राजश्रीसिंह (1844), राजारामसिंह (1873) व राजा भूरि सिंह (1904) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वास्तुकला हो या भित्तिचित्रकला, मूर्तिकला हो या काष्ठकला, जितना प्रोत्साहन इन्हें चम्बा में मिला शायद ही अन्यत्र कहीं मिला हो। चम्बा कलम शैली ने खास अपनी पहचान बनाई है। किसी घाटी की ऊंचाई पर खड़े होकर देखें तो समूचा चम्बा शहर भी किसी अनूठी कलाकृति जैसा ही लगता है। ढलानदार छतों वाले शहर, शिखर शैली के मंदिर, हरा भरा इसका चौगान और इसकी पृष्ठभूमि में यूरोपीय प्रभाव लिए महलों का वास्तुशिल्प सहसा ही मन मोह लेता है। यहाँ के प्राचीन रंगमहल व अखंडचंडीमहल में घूमते हुए अतीत की पदचाप भी सुनी जा सकती है।

चम्बा के संस्थापक राजा साहिल वर्मा ने 920 ई. में इस शहर का नाम अपनी बेटे चम्बा के नाम पर क्यों किया था, इस बारे में एक रोचक किंवदंती प्रचलित है। कहा जाता है कि राजकुमारी चंपावती बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी और नित्य स्वाध्याय के लिए एक साधु के पास जाया करती थी। एक रोज राजा को किसी कारणवश अपनी बेटे पर संदेह हो गया। शाम को जब साधु के आश्रम में बेटे जाने लगी तो चुपके से राजा भी उसके पीछे हो लिया। बेटे के आश्रम में प्रवेश करते ही जब राजा भी अंदर गया तो उसको कोई वहां दिखाई न दिया। लेकिन तभी अंदर से एक आवाज़ गूँजी कि उसका संदेह निराधार है और अपनी बेटे पर शक करने की सजा के रूप में उसकी निष्कलक बेटे छीन ली जाती है। साथ ही राजा को एक मंदिर बनाने का आदेश भी प्राप्त हुआ। चम्बा नगर के ऐतिहासिक चौगान के पास स्थित इस मंदिर को लोग चमसनी देवी के नाम से पुकारते हैं। वास्तुकला की दृष्टि से यह मंदिर अद्वितीय है। इस घटना के बाद राजा साहिल वर्मा ने नगर का नामकरण राजकुमारी चंपा के नाम पर किया, जो बाद में चम्बा कहलाने लगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और गलत का निशान लगाकर दीजिए। साथ ही वह वाक्य भी लिखिए जिसके कारण वाक्य सही या गलत साबित होता है।

- |   | सही                      | गलत                                 |
|---|--------------------------|-------------------------------------|
| उदाहरण - चम्बा की वादियों में ज़रूर कोई जादू है जो लोग खींचे चले आते हैं।                                   | <input type="checkbox"/> | <input checked="" type="checkbox"/> |
| औचित्य - कोई सम्मोहन है जो सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है और वे बार बार यहां दस्तक देने को चले आते हैं। |                          |                                     |
| 13 मंदिर में उठती आवाजें माहौल को आध्यत्मिक बना देती हैं।   | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/>            |
| 14 चम्बा ऐसी जगह है जहाँ इतिहास है लेकिन उसका कला के साथ कोई संगम नहीं होता।                                | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/>            |
| 15 चम्बा के लोग मनमौजी और मस्त होते हैं।  | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/>            |
| 16 डा. बोगल ने चम्बा की प्रकृति को आत्मसात करने के पहले ही इसे अचंभा कहा होगा।                              | <input type="checkbox"/> | <input type="checkbox"/>            |
| 17 चम्बा का सौभाग्य रहा इस कथन का क्या अभिप्राय है?   |                          |                                     |
|   |                          | [1]                                 |
| 18 समूचा चम्बा शहर भी किसी अनूठी कलाकृति जैसा ही लगता है। इस वाक्य का क्या अर्थ है?                         |                          |                                     |
|   |                          | [1]                                 |
| 19 राजा ने अपनी बेटी पर संदेह होने पर क्या किया?  |                          |                                     |
|   |                          | [1]                                 |
| 20 राजा को अपनी बेटी पर संदेह की क्या सज़ा मिली?  |                          |                                     |
|   |                          | [1]                                 |

